Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



कक्षा - 11

भूगोल

भारत भौतिक पर्यावरण

अध्याय-4 : जलवायु

भाग - 3

भारतीय मानसून-I

ओम प्रकाश खोजा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

विवरण (Overview)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1. मानसून जलवायु में एकरूपता एवं विविधता
2. भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक
3. भारतीय मानसून-I
4. भारतीय मानसून-II
5. शीत ऋतु
6. ग्रीष्म ऋतु
7. दक्षिण-पश्चिमी मानसून की ऋतु (वर्षा ऋतु)
8. मानसून के निवर्तन की ऋतु
9. भारत में वर्षा का वितरण
10. भूमंडलीय तापन

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

भारतीय मानसून की प्रकृति

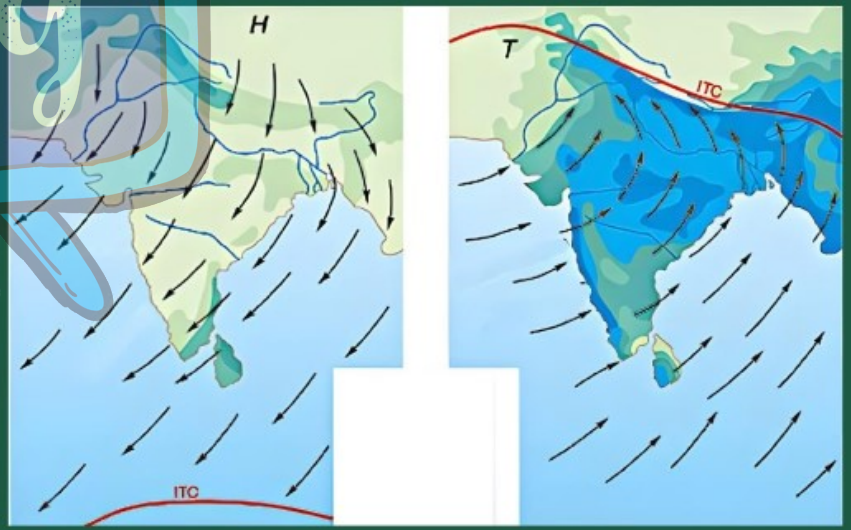
मानसून का अध्ययन क्षेत्रीय स्तर की बजाय भूमंडलीय स्तर पर

मानसून जलवायु

पवनें

दक्षिणी - पश्चिमी मानसूनी पवनें (ग्रीष्म)

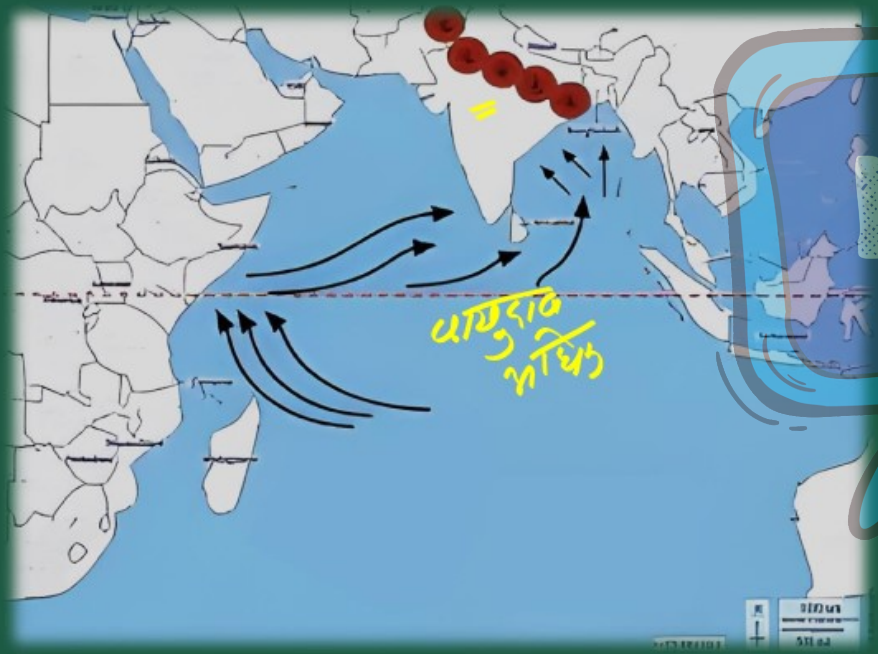
उत्तरी - पूर्वी मानसूनी पवनें (शीत ऋतु)



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मानसून का आरंभ



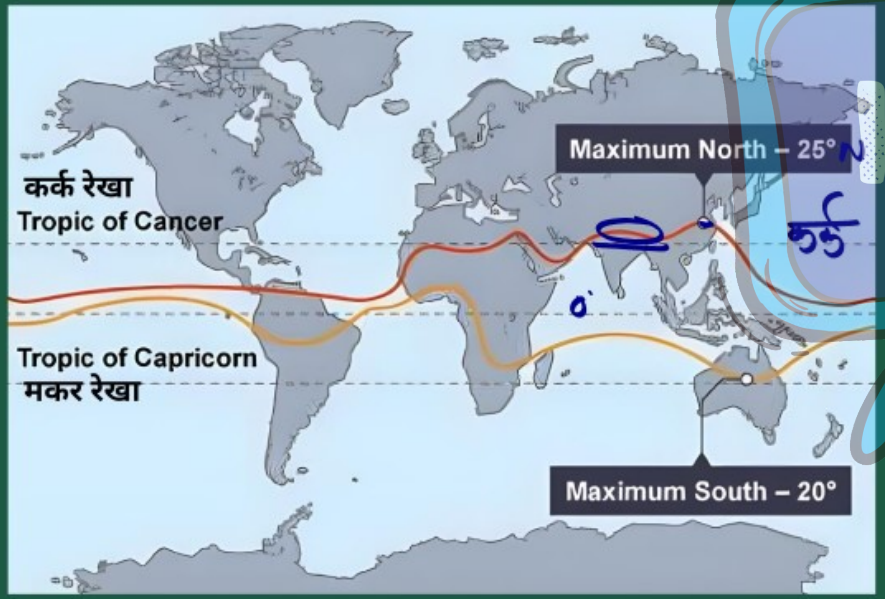
19वीं सदी के अंत में व्याख्या

- स्थल और समुद्र का विभेदी तापन ही मानसून पवनों के उपमहाद्वीप की ओर चलने के लिए मंच तैयार करता है।
- अप्रैल और मई में
  - सूर्य कर्क रेखा पर लम्बवत् = 21 जून
  - स्थल अत्यधिक गर्म
  - उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग पर एक गहन न्यून दाब क्षेत्र विकसित

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अंतः उष्ण कटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (आई.टी. सी. जेड.)

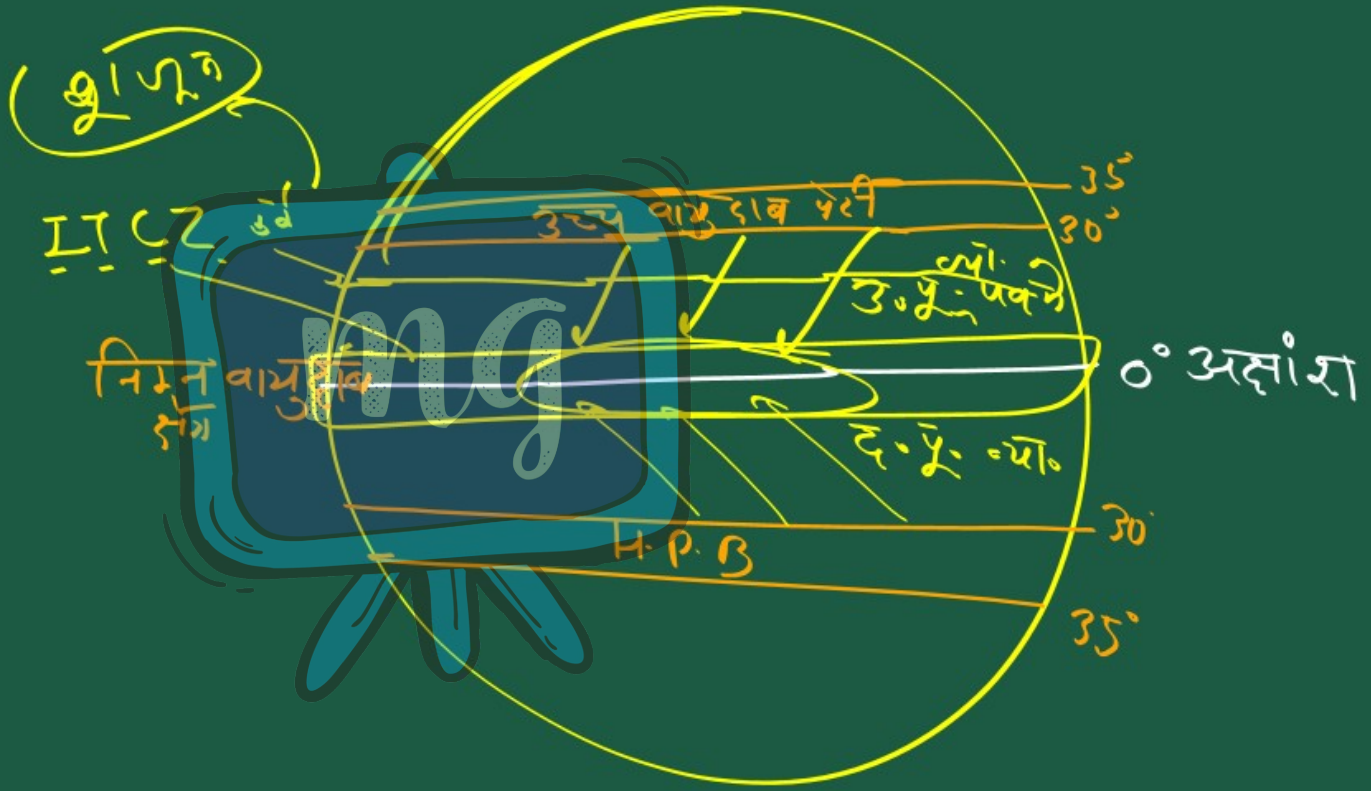


दक्षिण-पश्चिम मानसून

- विषुवत वृत्त पर स्थित एक निम्न वायुदाब क्षेत्र
- व्यापारिक पवनों का अभिसरण
- जुलाई में आई.टी.सी.जेड.
  - 20° उ. से 25° उ. अक्षांशों के आस-पास गंगा के मैदान में
  - मानसूनी गर्त का निर्माण

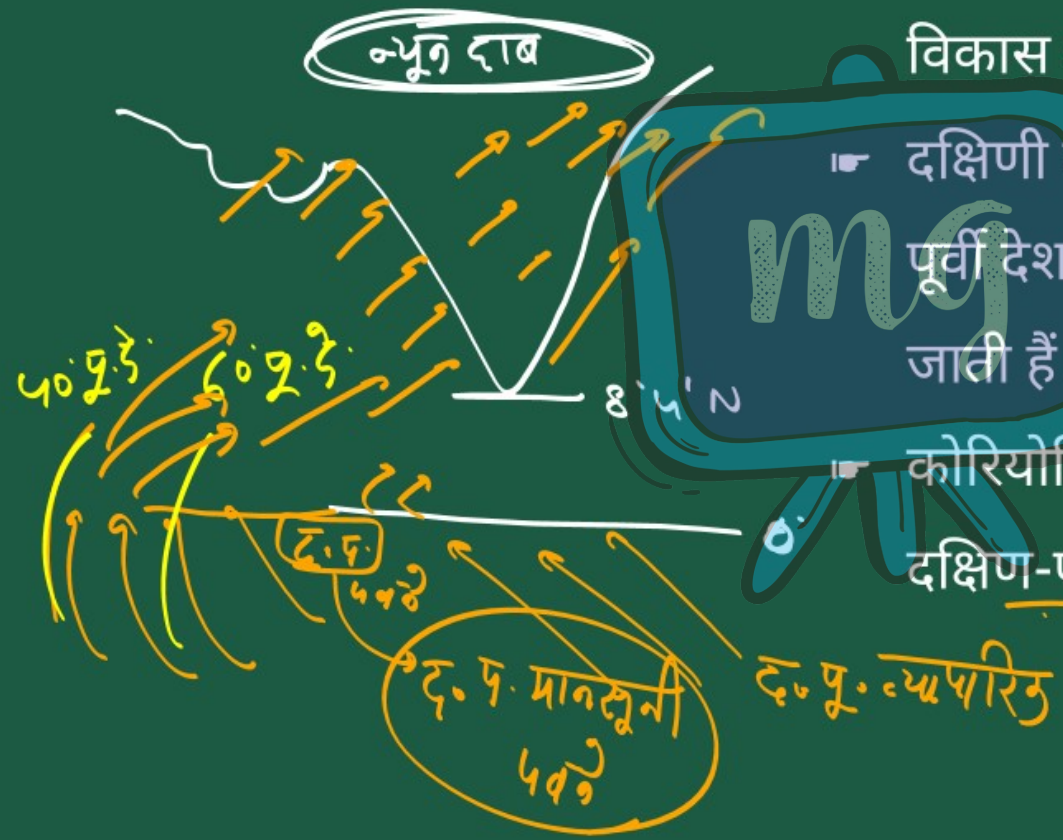
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



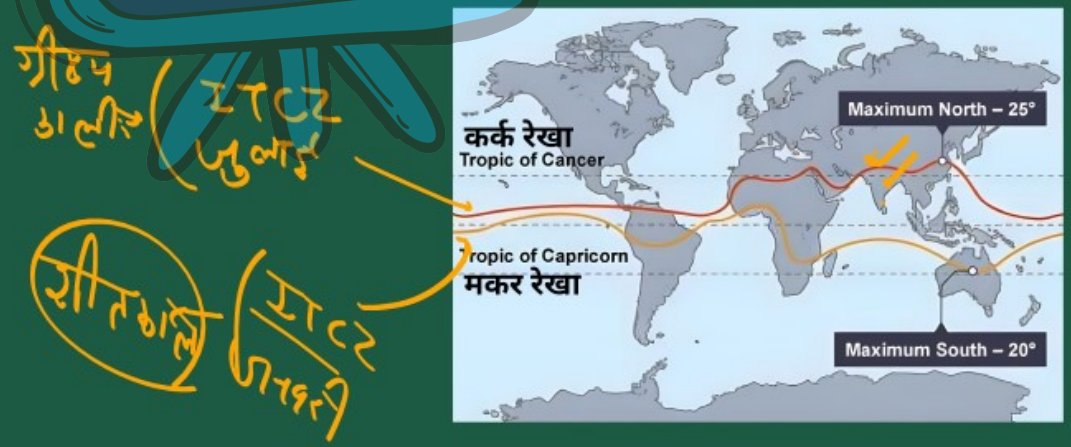
- उत्तर-पश्चिमी भारत पर तापीय निम्न वायुदाब के विकास को प्रोत्साहन।
- दक्षिणी गोलार्द्ध को व्यापारिक पवने 40°-60° पूर्वी देशांतरों के बीच विषुवत वृत्त को पार कर जाती हैं।
- कोरियोलिस बल के प्रभाव से पवनों की दिशा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर प्रवाहित।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan

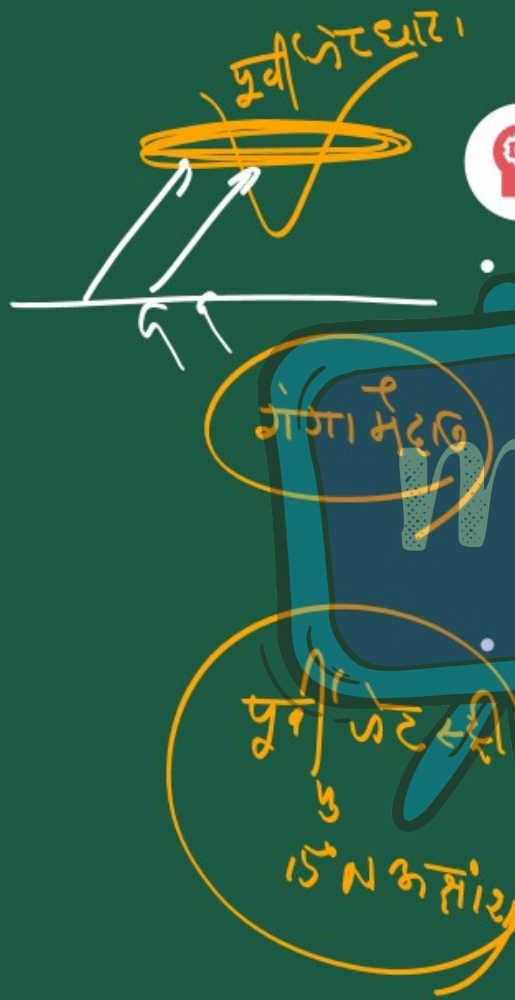
उत्तर-पूर्व मानसून

- शीत ऋतु में आई.टी.सी.जेड. दक्षिण की ओर खिसक जाता है।
- पवनों की दिशा दक्षिण-पश्चिम से बदलकर उत्तर-पूर्व की ओर प्रवाहित।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

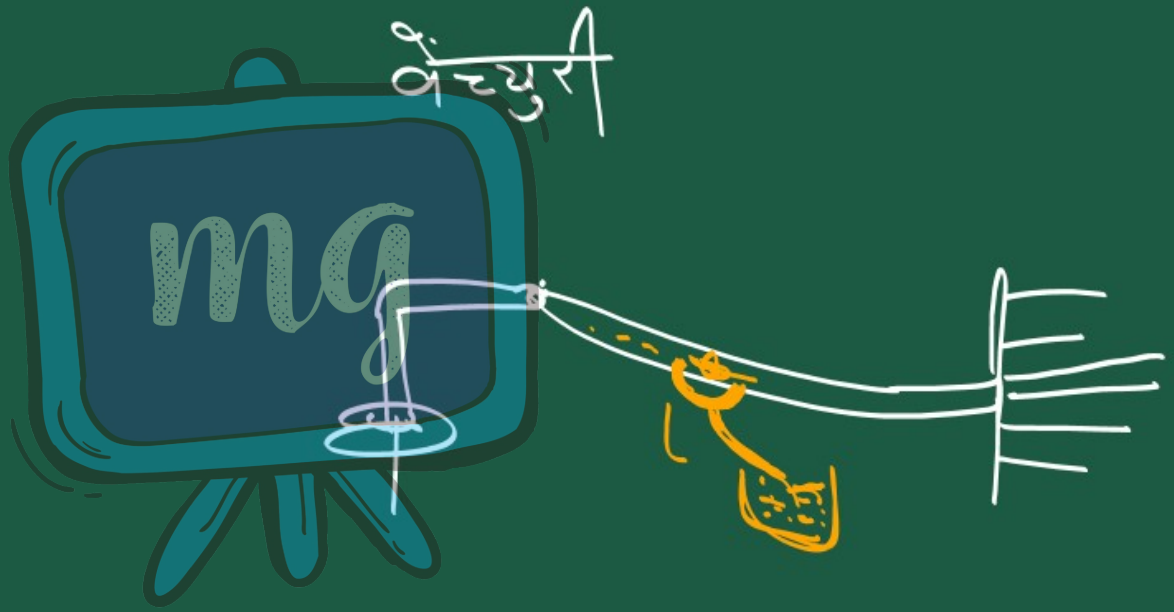


नोट

- अंतः उष्ण कटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र की स्थिति में परिवर्तन का संबंध हिमालय के दक्षिण में उत्तरी मैदान के ऊपर से पश्चिमी जेट प्रवाह द्वारा अपनी स्थिति के प्रत्यावर्तन से भी है।
- पश्चिमी जेट-प्रवाह के इस क्षेत्र से खिसकते ही दक्षिणी भारत में 15° उत्तर अक्षांश पर पूर्वी जेट-प्रवाह विकसित हो जाता है। इसी पूर्वी जेट प्रवाह को भारत में मानसून के प्रस्फोट (Burst) के लिए जिम्मेदार माना जाता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

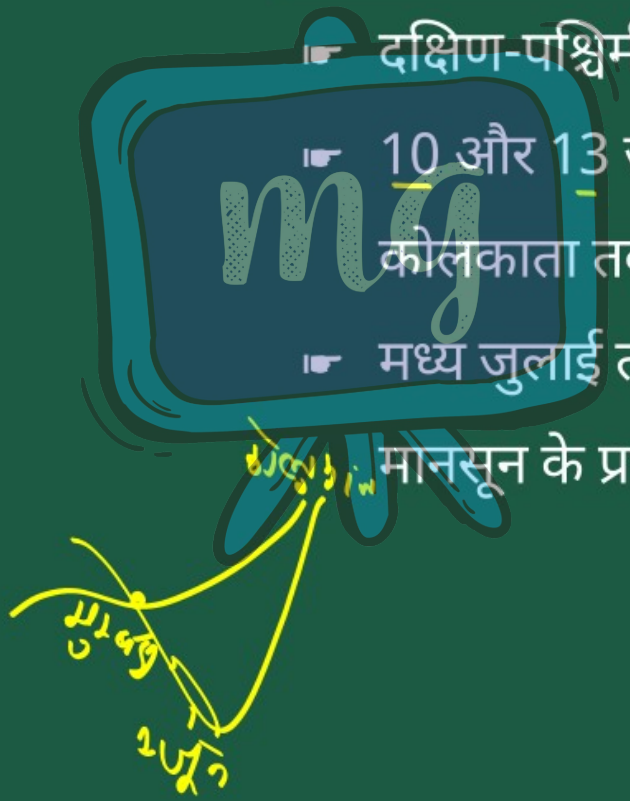


Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

मानसून का भारत में प्रवेश

- दक्षिण-पश्चिमी मानसून केरल तट पर 1 जून को
- 10 और 13 जून के बीच ये आर्द्र पवनें मुंबई व कोलकाता तक
- मध्य जुलाई तक संपूर्ण उपमहाद्वीप दक्षिण-पश्चिम मानसून के प्रभावाधीन



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



1 भारत में मानसून का प्रवेश व आरंभ

2 अंत:उष्ण कटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (आई.टी.सी.जेड.)



द.पू. व्यापारिक

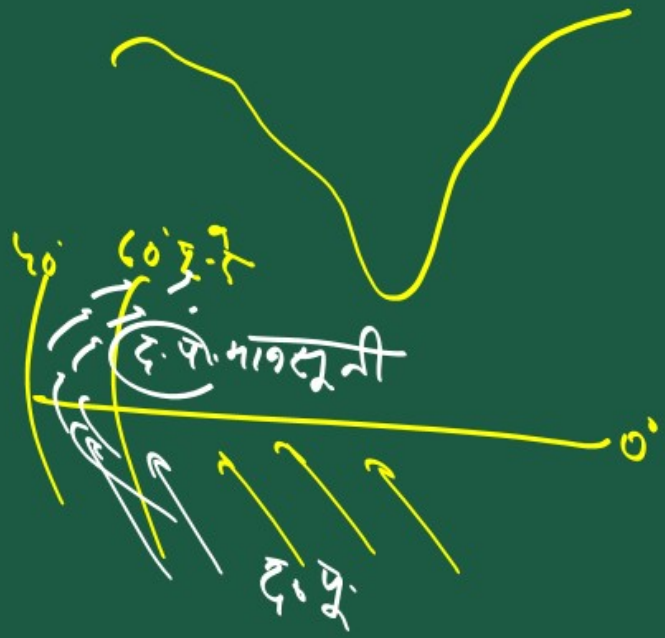
1 दक्षिणी गोलार्द्ध की व्यापारिक पवनें कौनसे देशांतरों के मध्य से भूमध्य रेखा को पार करती है?

अ 10°–20° पू. दे.

ब 40°–60° पू. दे.

स 40°–20° पू. दे.

द 10°–20° प. दे.



2 भारतीय मानसून केरल तट पर कब पहुँचता है?

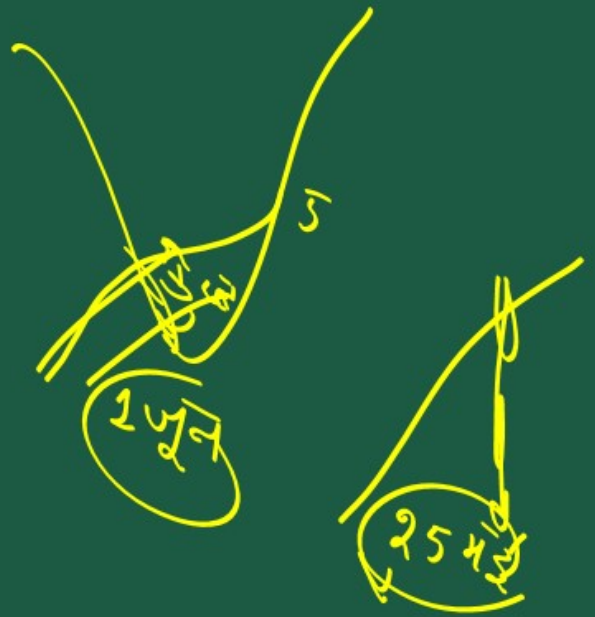
मालाबार

अ 1 जून

ब 1 जुलाई

स 10 जून

द 15 जुलाई





3 भारतीय मानसून प्रस्फोट हेतु जिम्मेदार है-

अ पश्चिमी जेट प्रवाह

ब पूर्वी जेट प्रवाह

स उपर्युक्त दोनों

द इनमें से कोई नहीं